

Ma'lumaati Pamphalots (Hindi)



इसका मूल्य : 250

Weekly Booklet : 250

अमीर अहले सुन्नत **امير اهل السنه** के बन्द अहम और
मुफ़ीद पेम्फ़लेट्स (किताब अलफ़ल)

मा 'लूमाती पेम्फ़लेट्स

संस्कृत 28



सोवानी इराक़ की फ़तवा का जवाब 02

सफ़ावात के बारी में ज़हन विचारण 03

इसने अलीक़ के फ़ुतूहात 04

सुवानी ज़ावत की 20 सुवानी ज़ावत 05

सिद्धे सौफ़र, अमीर अहले सुन्नत, बारीये च बरो इल्लामो, इज़ारे इल्लामा मोतबर अलु क़िमत

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी **محمد ابراهيم راضي**

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरी रज़वी دامت بركاتهم العالیه

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़
लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर
अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले । (سُتَطْرَفَ ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अब्बल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे ग़मे मदीना
व बकीअ
व मग़िफ़रत



13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : मा 'लूमाती पेम्फलेट्स

सिने त्बाअत : 1443 हि., 2022 ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : मक्तबतुल मदीना

मदनी इल्लितजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

मा 'लूमाती पेम्फलेट्स

येह रिसाला (मा 'लूमाती पेम्फलेट्स)

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरा रज़वी دامت برکاتुهمुम العالیه के उर्दू ज़बान में तहरीर कर्दा मुख़्तलिफ़ पेम्फलेट्स पर मुश्तमिल है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात ।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया) । (तारीख़ دمشق لابن عساکر ج ०१ ص १३८ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ फ़रमाइये ।

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ط
 أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

मा 'लूमाती पेम्फलेट्स

दुआए अत्तार : या रब्बल मुस्ताफ़ा ! जो कोई 26 सफ़हात का रिसाला :
 “मा 'लूमाती पेम्फलेट्स” पढ़ या सुन ले उसे अपनी ज़िन्दगी नेकियों में
 गुज़ारते हुए नेकी की दा'वत आम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और उसे बे
 हिसाब मग़िफ़रत से नवाज़ दे ।
 آمین بِجَاوِ خَاتَمِ التَّيْبِينِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी : صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुसलमान जब तक
 मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहता है फ़िरिश्ते उस पर रहमतें भेजते रहते हैं, अब
 बन्दे की मरज़ी है कम पढ़े या ज़ियादा । (अबन माज, 1/490, حدिथ: 907)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

अजीब अन्दाज़ में नफ़्स की गिरिफ़्त

हज़रते सय्यिद अबू मुहम्मद मुर्तइश رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मैं
 ने बहुत से हज़ किये और उन में से अक्सर सफ़रे हज़ किसी क़िस्म का
 जादे राह लिये बिगैर किये । फिर मुझ पर आशकार (या'नी ज़ाहिर) हुवा
 कि येह सब तो मेरे नफ़्स का धोका था क्यूं कि एक मरतबा मेरी मां ने
 मुझे पानी का घड़ा भर कर लाने का हुक्म दिया तो मेरे नफ़्स पर उन का
 हुक्म गिरां (या'नी बोझ) गुज़रा, चुनान्चे मैं ने समझ लिया कि सफ़रे हज़
 में मेरे नफ़्स ने मेरी मुवाफ़क़त फ़क़त अपनी लज़ज़त के लिये की और मुझे

धोके में रखा क्यूं कि अगर मेरा नफ़्स फ़ना हो चुका होता तो आज एक हक्के शर्ई पूरा करना (या'नी मां की इताअत करना) इसे (या'नी नफ़्स को) बेहद दुश्वार क्यूं महसूस होता !” (رساله تشریحی، ص 135)

हुब्बे जाह की लज़ज़त इबादत की मशक्कत आसान कर देती है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ कैसी दीनी सोच रखते और किस क़दर अजिजी के ख़ूगर होते हैं ! बा'जों की आदत होती है कि वोह आम लोगों से तो झुक झुक कर मिलते और उन के लिये बिछ बिछ जाते हैं मगर वालिदैन, भाई बहनों और बाल बच्चों के साथ उन का खवय्या जारिहाना, ग़ैर अख़लाकी और बसा अवकात सख़्त दिल आज़ार होता है, क्यूं ? इस लिये कि अ़वाम में उम्दा अख़लाक़ का मुज़ाहरा मक्बूलियते आम्मा का बाइस बनता है, जब कि घर में हुस्ने सुलूक करने से इज़्जतो शोहरत मिलने की ख़ास उम्मीद नहीं होती, इस लिये येह लोग अ़वाम में ख़ूब मीठे मीठे बने रहते हैं, इसी तरह जो इस्लामी भाई बा'ज मुस्तहब कामों के लिये बढ़ चढ़ कर कुरबानियां पेश करते मगर फ़राइजो वाजिबात की अदाएगी में कोताहियां बरतते हैं मसलन मां बाप की इताअत, बाल बच्चों की शरीअत के मुताबिक़ तरबियत और खुद अपने लिये फ़र्ज़ उलूम के हुसूल में ग़फ़लत से काम लेते हैं उन के लिये भी इस हिक़ायत में इब्रत के निहायत अहम मदनी फूल हैं । हकीक़त येह है कि जिन नेक कामों में “शोहरत मिलती और वाह वाह होती है” वोह दुश्वार होने के बा वुजूद ब आसानी सर अन्जाम पा जाते हैं क्यूं कि हुब्बे जाह (या'नी शोहरतो इज़्जत की चाहत)

के सबब मिलने वाली लज़्ज़त बड़ी से बड़ी मशक्कत आसान कर देती है। याद रखिये! “हुब्बे जाह” में हलाकत ही हलाकत है। इब्रत के लिये दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुलाहज़ा हों : ﴿1﴾ अल्लाह पाक की ताअत (या'नी इबादत) को बन्दों की तरफ़ से की जाने वाली ता'रीफ़ की महब्बत से मिलाने से बचते रहो, कहीं तुम्हारे आ'माल बरबाद न हो जाएं। (فردوس الاخبار، 1/223، حدیث: 1567) ﴿2﴾ दो भूके भेड़िये बकरियों के रेवड़ में इतनी तबाही नहीं मचाते जितनी तबाही हुब्बे मालो जाह (या'नी मालो दौलत और इज़्ज़तो शोहरत की महब्बत) मुसलमान के दीन में मचाती है।

(ترمذی، 4/166، حدیث: 2383)

हुब्बे जाह के मुतअल्लिक अहम तरीन मदनी फूल

“हुब्बे जाह” के तअल्लुक से “एहयाउल उलूम” की तीसरी जिल्द से ब तसरुफ़ कुछ मदनी फूल पेशे खिदमत हैं : “(हुब्बे जाह व रिया) नफ़्स को हलाक करने वाले आख़िरी उमूर और बातिनी मक्रो फ़रेब से है, इस में उलमा, इबादत गुज़ार और आख़िरत की मन्ज़िल तै करने वाले लोग मुब्तला किये जाते हैं। इस तरह के हज़रात बसा अवकात ख़ूब कोशिशें कर के इबादात बजा लाने, नफ़सानी ख़्वाहिशात पर काबू पाने बल्कि शुबुहात से भी खुद को बचाने में काम्याब हो जाते हैं, अपने आ'ज़ा को ज़ाहिरी गुनाहों से भी बचा लेते हैं मगर अ़वाम के सामने अपने नेक कामों, दीनी कारनामों और नेकी की दा'वत अ़ाम करने के लिये की जाने वाली काविशों (जैसे कि मैं ने येह किया, वोह किया, वहां बयान था, यहां बयान है, बयानात के लिये इतनी इतनी तारीखें “बुक” हैं, मदनी मश्वरे में रात इतने बज गए और आराम न मिलने की थकन है इसी लिये आवाज़ बैठी हुई

है। मदनी काफ़िले में सफ़र है, इतने इतने मदनी काफ़िलों में या दीनी कामों के लिये फुलां फुलां शहरों, मुल्कों का सफ़र कर चुका हूँ वगैरा वगैरा) के इज़हार के ज़रीए अपने नफ़्स की राहत के तलब गार होते हैं, अपना इल्मो अमल ज़ाहिर कर के मख़्लूक के यहां मक्बूलियत और उन की तरफ़ से होने वाली अपनी ता'जीमो तौकीर, वाह वाह और इज़्जत की लज़्जत हासिल करते हैं, जब मक्बूलियत व शोहरत मिलने लगती है तो उस का नफ़्स चाहता है कि इल्मो अमल ज़ियादा से ज़ियादा ज़ाहिर होना चाहिये ताकि और भी इज़्जत बढ़े लिहाज़ा वोह अपनी नेकियों, इल्मी सलाहियतों के तअल्लुक से मख़्लूक की इत्तिलाअ के मज़ीद रास्ते तलाश करता है और ख़ालिके करीम की इत्तिलाअ पर (कि मेरा रब मेरे आ'माल से बा ख़बर है और मुझे अज़्र देने वाला है उस पर) क़नाअत नहीं करता बल्कि इस बात पर खुश होता है कि लोग इस की वाह वाह और ता'रीफ़ करें, ख़ालिके करीम की तरफ़ से हासिल होने वाली ता'रीफ़ पर क़नाअत नहीं करता, नफ़्स येह बात ब ख़ूबी जानता है कि लोगों को जब इस बात का इल्म होगा कि फुलां बन्दा नफ़्सानी ख़्वाहिशात का तारिक है, शुबुहात से बचता है, राहे खुदा में ख़ूब पैसे ख़र्च करता है, इबादात में सख़्त मशक्कत बरदाशत करता है (ख़ौफ़े खुदा और इश्के मुस्तफ़ा में ख़ूब आहो ज़ारी करता और आंसू बहाता है, दीनी कामों की ख़ूब धूमें मचाता है, लोगों की इस्लाह के लिये बहुत दिल जलाता है, ख़ूब मदनी काफ़िलों में सफ़र करता, कराता है, ज़बान, आंख और पेट का कुफ़ले मदीना लगाता है, रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत के इतने इतने दर्स देता है, मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान), नमाज़े फ़ज़्र के लिये जगाने, अलाकाई दौरा का बड़ा ही पाबन्द है) तो उन की ज़बानों पर इस की ख़ूब ता'रीफ़

जारी होगी, वोह इसे इज़्जतो एहतिराम की निगाह से देखेंगे, इस की मुलाकात और ज़ियारत को अपने लिये बाइसे सआदत और सरमायए आखिरत समझेंगे, हुसूले बरकत के लिये मकान या दुकान पर दो क़दम रखने, दुआ फ़रमा देने, चाय पीने, दा'वते तआम क़बूल करने की निहायत लजाजत के साथ दरख़्वास्तें करेंगे, इस की राय पर चलने में दो जहां की भलाई तसव्वुर करेंगे, इसे जहां देखेंगे ख़िदमत करेंगे और सलाम पेश करेंगे, इस का झूटा खाने पीने की हिर्स करेंगे, इस का तोहफ़ा या इस के हाथ से मस की हुई चीज़ पाने में सब्कत करेंगे, इस की दी हुई चीज़ चूमेंगे, इस के हाथ पाउं चूमेंगे, एहतिरामन “हज़रत ! हुज़ूर ! या सय्यिदी !” वगैरा अल्काब के साथ ख़ाशिआना अन्दाज़ और आहिस्ता आवाज़ में बात करेंगे, हाथ जोड़ कर सर झुका कर दुआओं की इल्लिजाएं करेंगे, मजालिस में इस की आमद पर ता'जीमन खड़े हो जाएंगे, इसे अदब की जगह बिठाएंगे, इस के आगे हाथ बांध कर खड़े होंगे, इस से पहले खाना शुरूअ नहीं करेंगे, आज़िज़ाना अन्दाज़ में तोहफ़े और नज़राने पेश करेंगे, तवाज़ोअ करते हुए इस के सामने अपने आप को छोटा (मसलन ख़ादिम व गुलाम) ज़ाहिर करेंगे, ख़रीदो फ़रोख़्त और मुआमलात में इस से मुरव्वत बरतेंगे, इस को चीज़ें उम्दा क्वोलिटी की और वोह भी सस्ती या मुफ़्त देंगे, इस के कामों में इस की इज़्जत करते हुए झुक जाएंगे। लोगों के इस तरह के अक़ीदत भरे अन्दाज़ से नफ़्स को बहुत ज़ियादा लज़्जत हासिल होती है और येह वोह लज़्जत है जो तमाम ख़्वाहिशात पर ग़ालिब है, इस तरह की अक़ीदत मन्दियों की लज़्जतों के सबब गुनाहों का छोड़ना उसे मा'मूली बात मा'लूम होती है क्यूं कि “हुब्बे जाह” के मरीज़ को

नफ़स गुनाह करवाने के बजाए उलटा समझाता है कि देख गुनाह करेगा तो अक़ीदत मन्द आंखें फेर लेंगे ! लिहाज़ा नफ़स के तआवुन से मो'तक़िदीन में अपना वक़ार बर क़रार रखने के जज़्बे के सबब इबादत पर इस्तिक़ामत की शिद्दत नरमी व आसानी महसूस होती है क्यूं कि वोह बातिनी तौर पर लज़्ज़तों की लज़्ज़त और तमाम शहवात (या'नी ख़्वाहिशात) से बड़ी शहवत (या'नी अ़वाम की अक़ीदत से हासिल होने वाली लज़्ज़त) का इदराक (या'नी पहचान) कर लेता है, वोह इस खुश फ़हमी में पड़ जाता है कि मेरी ज़िन्दगी **अल्लाह** पाक के लिये और उस की मरज़ी के मुताबिक़ गुज़र रही है, हालां कि उस की ज़िन्दगी उस पोशीदा (हुब्बे जाह या'नी अपनी वाह वाह चाहने वाली छुपी) ख़्वाहिश के तहत गुज़रती है जिस के इदराक (या'नी समझने) से निहायत मज़बूत अक़्लें भी आजिज़ व बेबस हैं, वोह इबादते खुदावन्दी में अपने आप को मुख़्लिस और खुद को **अल्लाह** के महारिम (हराम कर्दा मुअमलात) से इज्तिनाब (या'नी परहेज़) करने वाला समझ बैठता है, हालां कि ऐसा नहीं वोह तो बन्दों के सामने ज़ेबो ज़ीनत और तसन्नोअ (या'नी बनावट) के ज़रीए ख़ूब लज़्ज़तें पा रहा है, उसे जो इज़्ज़तो शोहरत मिल रही है इस पर बड़ा खुश है । इस तरह इबादतों और नेक कामों का सवाब ज़ाएअ हो जाता है और उस का नाम मुनाफ़िकों की फ़ेहरिस्त में लिखा जाता है और वोह नादान येह समझ रहा होता है कि उसे **अल्लाह** का कुर्ब हासिल है !” (احياء العلوم، 3/338؛ تصرف)

मेरा हर अमल बस तेरे वासिते हो कर इज़्ज़लास ऐसा अता या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

फोन पर या बिल मुशाफ़ा बात शुरू करने से कबल की 40 निय्यतें

(इन में से मौक़अ की मुनासबत से दो चार निय्यतें कर ही लीजिये)

- ﴿1﴾ हत्तल इम्कान निगाहें नीची
- ﴿2﴾ मअ अच्छी निय्यत सलाम में पहल
- ﴿3﴾ जवाबे सलाम
- ﴿4﴾ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ
- ﴿5﴾ मिजाज पुरसी
- ﴿6﴾ वोह तबीअत पूछें तो हम्द
- ﴿7﴾ छींक का जवाब
- ﴿8﴾ अपनी छींक की हम्द के जवाब पर जवाबुल जवाब
- ﴿9﴾ أَنْزِلُوا النَّاسَ مَنَازِلَهُمْ
- ﴿10﴾ अमल كَلِّبُوا النَّاسَ عَلَى قَدْرِ عُقُوبَتِهِمْ
- ﴿11﴾ पहले तोलूंगा बा'द में बोलूंगा
- ﴿12﴾ मुहज्जब लहजा, आप जनाब.....
- ﴿13﴾ गुफ्तगू में मुस्कुराने की सुन्नत
- ﴿14﴾ ग़ैर ज़रूरी बात नहीं
- ﴿15﴾ चीख़ कर बात नहीं
- ﴿16﴾ तन्ज़ नहीं
- ﴿17﴾ बे जा ए'तिराज़ नहीं
- ﴿18﴾ मुखातब के गुस्से पर नरमी
- ﴿19﴾ “लम्बी” नहीं करूंगा
- ﴿20﴾ कम अल्फ़ाज़
- ﴿21﴾ झूट, झूटे मुबालगे नहीं
- ﴿22﴾ बे सोचे हां में हां नहीं
- ﴿23﴾ झूटी ता'रीफ़ व खुशामद नहीं
- ﴿24﴾ मुखातब को ख़ामोशी से सुनूंगा
- ﴿25﴾ बात नहीं काटूंगा
- ﴿26﴾ समझ जाने के बा वुजूद “हैं ?” या “जी ?” या “क्या कहा ?” या सुवालिया अन्दाज़ में सर से इशारा करने से इज्तिनाब
- ﴿27﴾ सियासी तबसिरों और
- ﴿28﴾ दहशत गर्दियों के बे जा तज़्किरों से इज्तिनाब
- ﴿29﴾ ग़ाइब के मन्फ़ी तज़्किरे पर चोकस हो कर ग़ीबत व तोहमत की ता'रीफ़ पर मुतवज्जेह
- ﴿30﴾ ग़ीबत चुग़ली करने सुनने से परहेज़
- ﴿31﴾ ज़रूरतन! اللهُ! تُوْبُوْا اِلَى اللهِ
- ﴿32﴾ नेकी की दा'वत
- ﴿33﴾ बिल मुशाफ़ा में मुम्किन हुवा तो कुछ न कुछ लिख कर या इशारे से
- ﴿34﴾ ख़लते मब्दस नहीं
- ﴿35﴾ दिल आज़ारी से इज्तिनाब
- ﴿36﴾ खुश ख़बरी पर मुबारक

बाद ﴿37﴾ परेशानी पर ग़म ख़्वारी ﴿38﴾ दूसरों के लिये सलाम ﴿39﴾
दुआए मग़िफ़रते बे हिसाब की मदनी इल्तिजा है ﴿40﴾ सलामे रुख़्सत ।

मकानात के बारे में अहम हिदायात

दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ﴿1﴾ जब क़ज़ाए हाज़त के लिये जाओ तो क़िब्ले को न मुंह करो और न पीठ । (بخاری، 1/155، حدیث: 394)

﴿2﴾ जो कोई क़ज़ाए हाज़त के वक़्त क़िब्ले को मुंह और पीठ न करे तो उस के लिये एक नेकी लिखी जाती है और एक गुनाह मिटा दिया जाता है । (بخاری، 1/362، حدیث: 1321)

﴿3﴾ अगर मकान का नक्शा बनाते बनवाते वक़्त आर्कीटेक्ट और बिल्डर्ज़ वगैरा अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ ज़ैल की चन्द बातों पर अमल करें तो बहुत सारा सवाब कमा सकते हैं : ﴿1﴾

वोशरूम बनाने में W.C. की तरकीब इस तरह हो कि बैठते वक़्त मुंह या पीठ क़िब्ले से 45 डिग्री के बाहर रहे और आसानी इस में है कि रुख़ क़िब्ले से 90 डिग्री पर हो या'नी नमाज़ के बा'द दोनों बार सलाम फेरने में जिस तरफ़ मुंह करते हैं उन दोनों سمتों में से किसी एक जानिब W.C. का रुख़ रखिये । फ़िक्हे हनफ़ी की मशहूर किताब “दुर्रे मुख़्तार” में है : क़ज़ाए हाज़त और पेशाब करते वक़्त क़िब्ले की तरफ़ मुंह या पीठ करना ना जाइज़ व गुनाह है । (بخاری، 1/608)

﴿2﴾ फ़व्वारा (SHOWER) लगाने में भी येही एहतियात रखी जाए ताकि बरहना नहाने वाला क़िब्ले की तरफ़ मुंह या पीठ करने से बचा रहे । आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فَرमाते हैं : “ब हालते बरहनगी (या'नी नंगे होने की हालत में) क़िब्ले को मुंह या पीठ करना मकरूह व ख़िलाफ़े अदब है ।” (फ़तावा रज़विय्या, 23/349)

﴿3﴾ बेडरूम में पलंग की तरकीब इस तरह रखी जाए कि सोने में पाउं क़िब्ले की तरफ़ न हों, कम अज़ कम 45 डिग्री के बाहर रहें । “फ़तावा शामी”

में है : “जान बूझ कर किब्ले की तरफ पाउं फैलाना मकरूहे तन्जीही है ।”
 (فتاوى شامى، 1/608، 610 لمخصاً) ﴿4﴾ बिलफर्ज अगर W.C. या शौवर, या चारपाई पलंग वगैरा का रुख ग़लत हो कि बरहना होने की हालत में मुंह या पीठ किब्ला रू हों या सोते हुए पाउं, तो इस्तिन्जा करने वाले या नहाने वाले या सोने वाले को बहर सूत इस का खयाल रखना होगा कि वोह बरहना हो कर किब्ले की तरफ मुंह या पीठ न करे, यूंही पाउं न फैलाए ।

नेकी की दा'वत (मुख़्तसर)

हम अल्लाह पाक के गुनाहगार बन्दे और उस के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के गुलाम हैं । यकीनन जिन्दगी मुख़्तसर है, हम हर वक़्त मौत के करीब होते जा रहे हैं, हमें जल्द ही अंधेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा, नजात अल्लाह पाक का हुक्म मानने और रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नतों पर अमल करने में है ।

आशिक़ाने रसूल की दीनी तहरीक, “दा'वते इस्लामी” का एक मदनी काफ़िला से आप की अलाके की मस्जिद में आया हुवा है । हम “नेकी की दा'वत” देने के लिये हाज़िर हुए हैं । मस्जिद में अभी दर्स जारी है, दर्स में शिर्कत करने के लिये मेहरबानी फ़रमा कर अभी तशरीफ़ ले चलिये, हम आप को लेने के लिये आए हैं, आइये ! तशरीफ़ ले चलिये ! (अगर वोह तय्यार न हों तो कहें कि) अगर अभी नहीं आ सकते तो नमाज़े मग़रिब वहीं अदा फ़रमा लीजिये, नमाज़ के बा'द اِنَّ شَاءَ اللهُ الْكُرَيْمِ सुन्नतों भरा बयान होगा, आप से दरख़्वास्त है कि बयान ज़रूर सुनियेगा । अल्लाह पाक हमें और आप को दोनों ज़हानों की भलाइयां नसीब फ़रमाए, आमीन ।

सब से अच्छा कौन ?

एक मरतबा हुजूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मिम्बरे अक्दस पर जल्वा फ़रमा थे कि एक सहाबी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने अर्ज की : “या रसूलल्लाह से वोह शख्स सब से अच्छा है जो कसरत से कुरआने करीम की तिलावत करे, ज़ियादा मुत्तकी हो, सब से ज़ियादा नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ करने वाला हो और सब से ज़ियादा सिलए रेहूमी (या'नी रिश्तेदारों के साथ अच्छा बरताव) करने वाला हो।” (مسند امام احمد، 10/402، حديث: 27504)

“इमामा बांधना सुन्नत है” के सतरह हुरूफ़ की निखत से इमामे के 17 मदनी फूल

6 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ﴿1﴾ इमामे के साथ दो रक्अत नमाज़ बिगैर इमामे की सत्तर (70) रक्अतों से अफ़ज़ल हैं (3233) (الفردوس بماثور الخطاب، 2/265، حديث: 2333) ﴿2﴾ टोपी पर इमामा हमारे और मुशिरकीन के दरमियान फ़र्क है हर पेच पर कि मुसलमान अपने सर पर देगा उस पर रोज़े क़ियामत एक नूर अता किया जाएगा। (جامع صغير، ص 353، حديث: 5725) ﴿3﴾ बेशक अल्लाह पाक और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं जुमुए के रोज़ इमामे वालों पर (529) (الفردوس بماثور الخطاب، 1/147، حديث: 529) ﴿4﴾ इमामे के साथ नमाज़ दस हज़ार नेकियों के बराबर है (3805) (الفردوس بماثور الخطاب، 2/406، حديث: 3805) ﴿5﴾ इमामे के साथ एक जुमुआ बिगैर इमामे के सत्तर (70) जुमुओं के बराबर है (355/37) (تاريخ ابن عساکر، 37/355) ﴿6﴾ इमामे अरब के ताज हैं तो इमामा बांधो तुम्हारा वक़ार बढ़ेगा और जो इमामा बांधे उस के

लिये हर पेच पर एक नेकी है। (14536: حديث، 202/5، جمع الجوامع) ﴿7﴾ दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब “बहारे शरीअत” हिस्सा : 16 (312 सफ़हात), सफ़हा 303 पर है : इमामा खड़े हो कर बांधे और पाजामा बैठ कर पहने, जिस ने इस का उलटा किया (या'नी इमामा बैठ कर बांधा और पाजामा खड़े हो कर पहना) वोह ऐसे मरज़ में मुब्तला होगा जिस की दवा नहीं ﴿8﴾ मुनासिब येह है कि इमामे का पहला पेच सर की सीधी जानिब जाए। (फ़तावा रज़विय्या, 22/199) ﴿9﴾ ख़ातमुल मुरसलीन, रहमतुल्लिल अ़ालमीन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मुबारक इमामे का शम्ला उमूमन पुशत (या'नी पीठ मुबारक) के पीछे होता था और कभी कभी सीधी जानिब, कभी दोनों कन्धों के दरमियान दो शम्ले होते, उलटी जानिब शम्ला लटकाना ख़िलाफ़े सुन्नत है। (اشعة الماعات، 3/582) ﴿10﴾ इमामे के शम्ले की मिक्दार कम अज़ कम चार उंगल और ज़ियादा से ज़ियादा (आधी पीठ तक या'नी तक़ीबन) एक हाथ (फ़तावा रज़विय्या, 22/182) ﴿11﴾ इमामा क़िब्ला रू खड़े खड़े बांधिये। (كشف اللباس في استحباب اللباس، ص 38) ﴿12,13﴾ इमामे में सुन्नत येह है कि ढाई गज़ से कम न हो, न छे गज़ से ज़ियादा और इस की बन्दिश गुम्बद नुमा हो। (फ़तावा रज़विय्या, 22/186) ﴿14,15﴾ रूमाल अगर बड़ा हो कि इतने पेच आ सकें जो सर को छुपा लें तो वोह इमामा ही हो गया और छोटा रूमाल जिस से सिर्फ़ दो एक पेच आ सकें लपेटना मक्रूह है (फ़तावा रज़विय्या, 7/299) ﴿16﴾ इमामा उतारते वक्त (बंधा बंधाया रख देने के बजाए) एक एक कर के पेच खोला जाए। (فتاوى عالمگیری، 5/330) ﴿17﴾ हज़रते अल्लामा शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस

देहलवी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ فرماتے हैं : **وَسْتَأْتِيكُمْ مِنْكُمْ مَنْ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** (नबिये अकरम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इमामा शरीफ अक्सर सफेद, कभी सियाह और कभी सब्ज होता था।)

(كشف التباس في استحباب اللباس، ص 38)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

हुजूर के इमामे शरीफ का नाम

हुजूर صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने इमामे शरीफ का भी नाम रखा हुआ था चुनान्चे फनाफिरसूल हज़रते अल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ فرमते हैं : नबिये अकरम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के इमामे शरीफ का नाम “सहाब” था जो आप ने हज़रते अलियुल मुर्तजा رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ को अता फ़रमा दिया था।

(وسائل الوصول الى شامل الرسول، ص 119)

शान क्या प्यारे इमामे की बयां हो या नबी

तेरी ना ले पाक का हर ज़र्रा रश्के तूर है

इमामे मस्जिद के लिये निहायत मुफ़ीद 30 मदनी फूल

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आखिरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अरबी صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अलीशान है : “तुम में से अच्छे लोग अज़ान कहें और कुरा इमामत करें।” (ابوداود، 1/242، حديث: 590) **इशादे इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ** : इस्लाम में नमाज़ बहुत अहम इबादत है और इस की अदाएगी के लिये बहुत एहतियात दरकार है यहां तक कि हमारे उलमाए किराम ने सराहत फ़रमाई है : “अगर नमाज़ चन्द

वज्ह से सहीह होती है और एक वज्ह से फ़ासिद, तो उसे फ़ासिद ही करार देंगे।” (फ़तावा रज़विय्या, 6/555 तस्हीलन) मज़ीद फ़रमाते हैं : “इमाम ऐसा शख़्स (मुकर्रर) किया जाए जिस की त़हारत सहीह हो, क़िराअत सहीह हो, सुन्नी सहीहुल अक़ीदा हो, फ़ासिद न हो, उस में कोई बात नफ़रते मुक़तदियान की न हो, मसाइले नमाज़ व त़हारत से आगाह हो।”

(फ़तावा रज़विय्या, 6/619)

❁ इस्लाम की बेहतरीन ख़िदमत और रिज़्के हलाल के हुसूल का एक उम्दा ज़रीआ मस्जिद की “इमामत” भी है, मगर ख़बरदार ! बे परवाई के बाइस मुक़तदियों की नमाज़ों का बोझ जहन्नम में पहुंचा सकता है, लिहाज़ा त़हारत व नमाज़ वग़ैरा के ज़रूरी मसाइल से आगाही होना और उन के मुताबिक़ अमल करना लाज़िम है। मुम्किन हो तो “दा’वते इस्लामी” के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में (या जहां मुयस्सर आए वहां) इमामत कोर्स ज़रूर ज़रूर ज़रूर कीजिये। (الشّو’बए इमामत कोर्स” के तहत 5 माह का “इमामत कोर्स” और 10 माह का “कुरआन लर्निंग कोर्स” शुरू किया गया है।)

❁1 “बहारे शरीअत” के इब्तिदाई चार हिस्से पढ़ कर समझ लीजिये, ज़रूरतन उलमाए अहले सुन्नत से भी रहनुमाई हासिल कीजिये ❁2 नमाज़ में जो सूरतें और अज़कार पढ़ते हैं वोह लाज़िमन किसी सुन्नी क़ारी साहिब को सुना दीजिये (दा’वते इस्लामी की “टेस्ट मजलिस” को भी सुना सकते हैं) ❁3 अगर मआशी परेशानी न हो तो बिला उजरत इमामत ان شاء الله आप के लिये दोनों जहां में बाइसे सआदत है।

बिला उजरत अज़ान व इमामत की फ़ज़ीलत : हज़रते अबू हु़रैरा رضي الله عنه फ़रमाते हैं : “इमाम व मुअज़्ज़िन को उन सब के बराबर सवाब है जिन्हों ने उन के साथ नमाज़ पढ़ी है।” (کنز العمال، 4/239، حدیث: 20370) (1/558) **4** बिला सख़्त मजबूरी तनख़्वाह बढ़ाने का मुतालबा मुनासिब नहीं **5** ज़ियादा मुशाहरे की लालच में दूसरी मस्जिद में चले जाना एक इमाम को किसी तरह ज़ेब नहीं देता **6** हो सके तो पेशगी तनख़्वाह न लीजिये बल्कि पहली तारीख़ से क़बूल भी तनख़्वाह क़बूल न कीजिये कि ज़िन्दगी का क्या भरोसा ! **7** सुवाल करने, बल्कि क़र्ज़ मांगने से भी बचिये **8** आज कल बा'ज़ इमाम व ख़तीब अपने आप को सिर्फ़ “ख़तीब” और बा'ज़ मुअज़्ज़िन साहिबान खुद को “नाइब इमाम” कहना कहलवाना पसन्द करने लगे हैं, इमामुल अम्बिया صلى الله عليه وآله وسلم के गुलाम को “इमाम” और सरकारे मदीना صلى الله عليه وآله وسلم के मुअज़्ज़िन हज़रते बिलाल رضي الله عنه के दीवाने को “मुअज़्ज़िन” कहलवाने में शर्म महसूस नहीं करनी चाहिये **9** लिबासे तक्वा इख़्तियार कीजिये। झूट, ग़ीबत, चुग़ली, वा'दा ख़िलाफ़ी वग़ैरा गुनाहों से परहेज़ करते रहिये, वरना आख़िरत के नुक़सान के साथ साथ दुन्या में भी लोग आप से बदज़न होंगे **10** ज़ियादा बोलने ख़ूब क़हक़हे लगाने और मज़ाक़ मस्ख़री करने से इज़्ज़तो वक़ार में कमी आती है, मुक़्तदियों से ज़ियादा बे तकल्लुफ़ भी मत हों वरना आपस का लिहाज़ जाता रहेगा **11** हुब्बे जाह से बचिये, शोहरतो इज़्ज़त बनाने की ख़्वाहिश व कोशिश में हलाकत ही हलाकत है **12** इमाम का मिलन सार होना लोगों को दीन के क़रीब करने के लिये

निहायत मुफ़ीद है लिहाज़ा नमाज़ों के बा'द लोगों से मुलाक़ात फ़रमाइये फिर थोड़ी देर के लिये वहीं तशरीफ़ भी रखिये मगर दुन्या की बातें हरगिज़ मत कीजिये, सिर्फ़ दीनी गुफ़्तगू वोह भी आहिस्तगी के साथ कीजिये, कि नमाज़ियों वग़ैरा को तश्वीश (या'नी परेशानी) न हो ﴿13﴾ जो इमाम मिलन सार न हो, लोगों से दूर दूर रहे या सिर्फ़ अपने जैसे दाढ़ी इमामे वालों ही से मेलजोल रखे तो हो सकता है अ़म लोग उस इमाम से दूर भागें, और येह भी हो सकता है कि इमामत वग़ैरा में आड़ा (या'नी मुश्किल) वक़्त आने की सूरत में लोगों के तअ़वुन से महरूमी रहे और फिर..... ﴿14﴾ मुअज़्ज़िन व खुद्दामे मस्जिद वग़ैरा से महब्बत भरा रवय्या रखिये, इन पर हुक्म चलाने के बजाए सअ़ादत समझते हुए मौक़अ ब मौक़अ अपने हाथों से मस्जिद की सफ़ाई वग़ैरा करते रहिये, दरियां भी खुद बिछा लीजिये, ग़ैर ज़रूरी बत्ती पंखे वग़ैरा भी खुद ही बन्द कर दीजिये ﴿15﴾ वुजूख़ाने वग़ैरा की सफ़ाई में भी खुद्दामे मस्जिद का हाथ बटाइये । اِنْ شَاءَ اللهُ ख़ूब सवाब भी मिलेगा और महब्बत भरी फ़ज़ा भी क़ाइम होगी ﴿16﴾ मस्जिद की इन्तिज़ामिया के साथ हरगिज़ उल्ज़ाव पैदा न कीजिये, उन के साथ हुस्ने सुलूक के साथ पेश आइये और कोशिश कर के उन्हें हर माह तीन दिन के लिये दा'वते इस्लामी के सुन्नतें सीखने सिखाने के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करवाइये ﴿17﴾ किसी भी सुन्नी इमाम व इन्तिज़ामिया से हरगिज़ मत बिगाड़िये, उन पर तन्क़ीद कर के उन्हें अपना मुख़ालिफ़ न बनाइये, बिलफ़र्ज़ कभी आप से कोताही हो भी

जाए तो फ़ौरन मुआफ़ी मांग लीजिये । हां अगर किसी की शर्ई ग़लती हो तो निहायत नरमी के साथ बराहे रास्त उस की इस्लाह कीजिये ﴿18﴾ अतराफ़ की मसाजिद के अइम्माए अहले सुन्नत और मसाजिद की कमेटियों से अच्छे तअल्लुकात काइम कीजिये और उन्हें दा'वते इस्लामी से ख़ूब क़रीब कीजिये और सुन्नतें सीखने सिखाने के मदनी क़ाफ़िलों में हर माह तीन दिन के लिये सफ़र करवाइये ﴿19﴾ जुमुआ व ईदैन में आ'ला हज़रत के “खुत्बाते रज़विय्या” ही पढ़िये । (“अल मदीनतुल इल्मिय्या” (दा'वते इस्लामी) ने इन खुत्बों को मुख़्तसर कर के “फ़ैज़ाने खुत्बाते रज़विय्या” के नाम से जारी किया है) ﴿20﴾ जुमुआ को उमूमन नमाज़ियों की अक्सरिय्यत खुत्बे के वक़्त पहंचती है, ऐसे में लोगों की नफ़िसय्यात का ख़याल रखना बहुत ज़रूरी है, मसलन मुक़र्ररा वक़्त पर जमाअत काइम होना, बयान में मुनासिब दिलचस्पी का सामान मुहय्या करना वग़ैरा । बयान आसान और सादा अल्फ़ाज़ पर मुशतमिल होना चाहिये, अ़वाम में अदक़ (या'नी बहुत मुशिकल) मज़ामीन न छेड़िये, इस रिवायत : **كَلِمَ النَّاسِ عَلَى قَدْرِ عَقُولِهِمْ** (या'नी “लोगों की अक्लों के मुताबिक़ कलाम करो ।” (مرقات، 9/373)) को मद्दे नज़र रखिये, उमूमन लोग औलियाए किराम **رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ** के वाक़िआत व करामात दिलचस्पी से सुनते हैं और अगर उन को सुन्नतें भी सिखाई जाएं तो एक दम क़रीब आ जाते हैं । क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी का ज़ेहन भी दीजिये, हर बयान का इख़िताम दा'वते इस्लामी के सुन्नतें सीखने सिखाने के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की

तरगीब पर हो तो मदीना मदीना । (बिल खुसूस दा'वते इस्लामी के शो'बे "अइम्माए मसाजिद" से तअल्लुक़ रखने वाले अइम्मा व खुतबा "हफ़तावार रिसाला मुतालाअ" से ही जुमुआ का बयान फ़रमाएं) ﴿21﴾ बयान, खुत्बा, दुआ व सलातो सलाम वगैरा के लिये स्पीकर ओफ़ (OFF) होने की हालत में मुंह की सीध में पहले ही से जमा लीजिये फिर उस को ओन (ON) कीजिये वरना "खड़ खड़" का इन्तिहाई ना पसन्दीदा शोर मस्जिद में गूजेगा ﴿22﴾ उलमाए अहले सुन्नत के माबैन जिन मसाइल में इख़िलाफ़ पाया जाता है उन के बयान से इज्तिनाब फ़रमाइये ﴿23﴾ अगर आप बा सलाहिय्यत अ़ालिमे दीन हैं तो रोज़ाना दर्से कुरआन (कन्जुल ईमान शरीफ़, तफ़्सीरे सिरातुल जिनान से) और इसी तरह अहल होने की सूरत में दर्से हदीस देने का शरफ़ हासिल कीजिये ﴿24﴾ बयान वगैरा में अपने लिये अ़ाजिज़ी के अल्फ़ाज़ कहते वक़्त दिल पर ग़ौर कर लीजिये अगर उस वक़्त क़ल्ब अ़ाजिज़ी से ख़ाली हो तो इन्किसारी के अल्फ़ाज़ से आप खुद को झूट और रियाकारी के गुनाह से किस तरह बचा सकेगे ? ﴿25﴾ दर्सी बयान से क़ब्ल तय्यारी की आदत बनाइये ﴿26﴾ दीगर कुतुबे दीनिया के साथ साथ हुसामुल हरमैन, एहयाउल उलूम, मिन्हाजुल अ़ाबिदीन वगैरा भी मुतालाए में रखिये ﴿27﴾ रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स देने या सुनने की सआदत हासिल कीजिये ﴿28﴾ आप की मस्जिद में हफ़तावार अ़लाक़ाई दौरा ज़रूर होना चाहिये, उस में आप खुद भी शरीक हों, फिर देखिये आप की मस्जिद में सुन्नतों की कैसी बहारे आती हैं ﴿29﴾ हर

माह कम अज़ कम तीन दिन सुन्नतें सीखने सिखाने के लिये मदनी काफ़िले में सफ़र को अपना मा'मूल बनाइये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** इस की बरकतें खुद ही देख लेंगे ﴿30﴾ रोज़ाना अपने आ'माल का जाएज़ा ले कर “नेक आ'माल” का रिसाला पुर कीजिये और हर माह की पहली तारीख़ अपने यहां के “शो'बए इस्लाहे आ'माल” के जिम्मेदार इस्लामी भाई को जम्अ करवाते रहिये । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** तक्वे का अनमोल खज़ाना हाथ आएगा और इश्के रसूल के छलक्ते जाम नसीब होंगे ।

क़ियामत की दहशत से महफूज़ लोग

हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا** से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : “तीन लोग ऐसे होंगे जिन्हें बड़ी घबराहट (या'नी क़ियामत) दहशत ज़दा न कर सकेगी और हिसाब उन तक न पहुंचेगा, वोह मुश्क के टीले पर होंगे यहां तक कि मख़्लूक हिसाब से फ़ारिग़ हो जाए । (पहला :) वोह शख़्स जो **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये कुरआन पढ़े और उस के ज़रीए क़ौम की इमामत कराए और क़ौम भी उस से राज़ी हो । (दूसरा :) **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये नमाज़ों की तरफ़ बुलाने वाला (या'नी मुअज़्ज़िन) । (तीसरा :) वोह गुलाम जिस ने अपने रब और अपने दुन्यवी आका का मुआमला खुश उस्लूबी से निभाया ।”

(9280:مجم اوسط 6/425، رقم)

फ़ज़ाइले आफ़ात और 20 रूहानी इलाज

❁ **तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ﴿1﴾ मुसलमान को जो भी तक्लीफ़, बीमारी, दुख, परेशानी, अज़ियत और ग़म पहुंचे यहां तक कि अगर उस को कांटा भी चुभ जाए, **अल्लाह** पाक इन के सबब उस के गुनाह मिटा देता है। (بخاری، 4/3، حدیث: 5641) ﴿2﴾ क़ियामत के दिन जब मुसीबत ज़दा लोगों को सवाब दिया जाएगा तो अफ़ियत के साथ रहने वाले तमन्ना करेंगे कि “काश! दुनिया में इन की खालें कैंचियों से काटी जातीं।” (ترمذی، 4/180، حدیث: 2410) ﴿3﴾ जो एक रात बीमार रहा, सब्र किया और **अल्लाह** पाक की रिज़ा पर राज़ी रहा तो वोह गुनाहों से ऐसा निकल गया जैसे उस की मां ने उसे आज ही जना हो। (نوارالاصول، 3/147)

जे सोहना मेरे दुख विच राज़ी ते मैं सुख नूं चुल्लहे पावां

❁ रहमते आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हज़रते उम्मुस्साइब के पास तशरीफ़ ले गए, फ़रमाया : तुझे क्या हुआ है जो कांप रही है? अर्ज़ की : बुख़ार है, **अल्लाह** पाक इस में बरकत न करे। फ़रमाया : बुख़ार को बुरा न कह कि वोह आदमी की ख़ताओं को इस तरह दूर करता है जैसे भट्टी लोहे के मैल को। (مسلم، 1068، حدیث: 6570)

❁ हज़रते अता बिन अबू रबाह رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ने मुझ से फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें अहले जन्नत में से कोई औरत न दिखाऊं? मैं ने अर्ज़ की : ज़रूर दिखाइये। फ़रमाया : येह हबशी औरत, जब येह नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पास आई

तो इस ने अर्ज की : मुझे “मिर्गी” है जिस की वजह से मेरा सत्र या 'नी पर्दा खुल जाता है लिहाजा अल्लाह पाक से मेरे लिये दुआ कीजिये । इर्शाद हुवा : अगर तुम चाहो तो सब्र करो और तुम्हारे लिये जन्नत है और अगर चाहो तो मैं अल्लाह पाक से तुम्हारे लिये दुआ करूं कि वोह तुम्हें अफ़ियत अता फ़रमा दे । तो इस ने अर्ज की : मैं सब्र करूंगी । फिर अर्ज की : मेरा पर्दा खुल जाता है, अल्लाह पाक से दुआ कीजिये कि मेरा पर्दा न खुला करे । फिर आप ने उस के लिये दुआ फ़रमाई ।

(بخاری 4/6، حدیث: 5652)

❁ हज़रते ज़ह्राक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهَا का कौल है : जो हर चालीस रात में एक मरतबा भी आफ़त या फ़िक्र व परेशानी में मुब्तला न हो उस के लिये अल्लाह पाक के यहां कोई भलाई नहीं । (مکاشفة القلوب، ص 15)

मेरे बीमार, बख़्त बेदार ! देखा आप ने ! बीमारी और आफ़त कितनी बड़ी ने'मत है कि इस की बरकत से अल्लाह पाक बन्दे के गुनाह मिटाता और दरजात बढ़ाता है, बेशक मरज़ हो या ज़ख़्म, ज़ेहनी टेन्शन हो या घबराहट, नींद कम आती हो या नफ़िसयाती अमराज़, औलाद के सबब ग़म हो या बे औलादी का सदमा, रोज़ी की तंगी हो या कर्ज़े का बहुत बड़ा बोझ अल ग़रज़ मुसलमान को मुसीबतों पर सवाब मिलता है, हर सूूरत में सब्र से काम लीजिये कि बे सब्री से तकलीफ़ तो जाती नहीं उलटा नुक़सान ही होता है और वोह भी बहुत बड़ा नुक़सान या'नी सब्र के ज़रीए हाथ आने वाला सवाब ही ज़ाएअ हो जाता है । याद रखिये ! सब

से ख़तरनाक बीमारी कुफ़्र की बीमारी है और गुनाहों की बीमारी भी सख़्त तश्वीश नाक है। आफ़तो मुसीबत और बीमारी व परेशानी लोगों से छुपाना कारे सवाब है। फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : “जिस के माल या जान में मुसीबत आई फिर उस ने उसे पोशीदा रखा और लोगों से शिकायत न की तो अल्लाह पाक पर हक़ है कि उस की मग़िफ़रत फ़रमा दे।”

(मज्मू' अوسط, 1/214, حدیث 737)

❁ हज़रते शैख़ सा'दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : एक दफ़आ दरिया के किनारे पर एक बुजुर्ग तशरीफ़ फ़रमा थे उन के मुबारक पाउं को चीते ने काट लिया था और ज़ख़म बेहद ख़तरनाक सूत इख़्तियार कर गया था, लोग जम्अ़ थे और उन पर रहूम खा रहे थे। मगर वोह फ़रमा रहे थे, कोई तश्वीश की बात नहीं येह तो मक़ामे शुक्र है कि मुझे जिस्मानी मरज़़ मिला, अगर मैं गुनाहों के मरज़़ में मुब्तला हो जाता तो क्या करता !

(गुलिस्ताने सा'दी, स. 60)

❁ **रोज़ी के लिये :** يَا مُسَيَّبَ الْأَسْبَابِ 500 बार, अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ 11, 11 बार, बा'द नमाज़े इशा क़िब्ला रू बा वुजू नंगे सर ऐसी जगह पढ़िये कि सर और आस्मान के दरमियान कोई चीज़ हाइल न हो, यहां तक कि सर पर टोपी भी न हो। इस्लामी बहनें ऐसी जगह पढ़ें जहां किसी अजनबी या'नी ग़ैर महरम की नज़र न पड़े। إِنَّ شَاءَ اللهُ रोज़ी की तंगी दूर होगी। يَا اللهُ 101 बार काग़ज़ पर लिख कर ता'वीज़ बना कर बाजू पर बांध लीजिये, जाइज़ काम धन्दे और हलाल नोकरी में दिल लग जाएगा।

﴿3﴾ 7 रोज़ तक हर नमाज़ के बा'द **يَا رَزَائِقُ يَا رَحْمَنُ يَا رَحِيمُ يَا سَلَامُ** 112 बार पढ़ कर दुआ कीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** बीमारी, तंगदस्ती व नादारी से नजात हासिल होगी ।

﴿4﴾ **चोरी से हिफ़ाज़त :** **يَا جَلِيلُ** (ऐ बुजुर्गी वाले) 10 बार पढ़ कर अपने मालो अस्बाब और रक़म वगैरा पर दम कर दीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** चोरी से महफूज़ रहेगा ।

﴿5﴾ **शादी के लिये :** जिन लड़कियों की शादी न होती हो या मंगनी हो कर टूट जाती हो वोह नमाज़े फ़ज़्र के बा'द **يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ** 312 बार पढ़ कर अपने लिये नेक रिश्ता मिलने की दुआ करें, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** जल्द शादी हो और खावन्द भी नेक मिले ।

﴿6﴾ **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ** 143 बार लिख कर ता'वीज़ बना कर कुंवारा अपने बाजू में बांधे या गले में पहन ले उस की जल्द शादी हो जाएगी और घर भी अच्छा चलेगा ।

﴿7﴾ **औलादे नरीना के लिये :** **يَا مُتَكَبِّرُ** 10 बार, जौजा से “मिलाप” से क़ब्ल पढ़ लेने वाला नेक बेटे का बाप बनेगा ।

﴿8﴾ **हामिला शहादत की उंगली अपनी नाफ़ के गिर्द घुमाते हुए** **يَا مَتِّينُ** 70 बार पढ़े । येह अमल 40 दिन तक जारी रखे, **अल्लाह** के फ़ज़्लो करम से बेटा इनायत होगा । इस अमल में हर मरज़ का इलाज है । कोई सा भी मरीज़ येह अमल करे तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** शिफ़ा पाए । (नाफ़ से कपड़ा हटाने की ज़रूरत नहीं, कपड़े के ऊपर ही से येह अमल करना है)

﴿9﴾ **हामिला के पेट पर हाथ रख कर शौहर इस तरह कहे :** **إِنْ كَانَ ذَكَرًا فَقَدْ سَمَّيْتُهُ مُحَمَّدًا** : अगर लड़का है तो मैं ने इस का नाम मुहम्मद रखा” **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** लड़का पैदा होगा ।

अगर कहते वक्त अरबी इबारत के मा'ना जेहन में हों तो तरजमे के अल्फ़ाज़ कहने की ज़रूरत नहीं वरना तरजमे के अल्फ़ाज़ भी कह लें)

﴿10﴾ दुश्मन से हिफ़ाज़त के लिये : لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ चलते फिरते उठते बैठते ब कसरत पढ़ने से إِنَّ شَاءَ اللَّهُ दुश्मन से हिफ़ाज़त होगी । ﴿11﴾

गुमशुदा इन्सान वगैरा मिलने और हर हाज़त के लिये : अल्लाह पाक की रहमत पर मज़बूत भरोसे के साथ चलते फिरते, वुजू बे वुजू ज़ियादा से ज़ियादा ता'दाद में يَارَبِّ مُوسَى يَا رَبِّ كَلِيمٍ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़ते रहिये । इसी दौरान चन्द बार दुरूद शरीफ़ भी पढ़ लीजिये । गुमशुदा इन्सान, सोना, माल, गाड़ी वगैरा إِنَّ شَاءَ اللَّهُ मिल जाएंगे । बल्कि दीगर हाज़ात के लिये भी येह अमल मुफ़ीद है । ﴿12﴾ असरात का रूहानी

इलाज : لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ 41 बार लिख (या लिखवा) कर प्लास्टिक कोर्टिंग कर के चमड़े या रेगज़ीन या कपड़े में सी कर बाजू में बांधने या गले में पहन लेने से إِنَّ شَاءَ اللَّهُ असरात दूर होंगे । ﴿13﴾ जादू का रूहानी

इलाज : لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ 101 बार पढ़ कर सेहर ज़दा (या'नी जिस पर जादू किया गया हो उस) पर दम कर दिया जाए या येही लिख कर (या लिखवा) कर धो कर पिला दिया जाए तो إِنَّ شَاءَ اللَّهُ सेहर (या'नी जादू) का असर ख़त्म हो जाएगा । ﴿14﴾ अगर नींद न आती हो तो : अगर नींद न आती

हो तो لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ 11 बार पढ़ कर अपने ऊपर दम कर दीजिये, إِنَّ شَاءَ اللَّهُ नींद आ जाएगी । ﴿15﴾ केन्सर का रूहानी इलाज : अब्बल आख़िर

ग्यारह बार दुरूदे इब्राहीमी और दरमियान में “सूरए मरयम” पढ़ कर

पानी पर दम कीजिये, ज़रूरतन दूसरा पानी मिलाते रहिये, मरीज़ वोही पानी सारा दिन पिये, येह अमल 40 दिन तक बिला नागा करते रहिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** शिफ़ा हासिल होगी। (दूसरा भी पढ़ कर दम कर के मरीज़ को पिला सकता है) ﴿16﴾ **बुख़ार का रूहानी इलाज** : **يَا عَفُورُ** कागज़ पर तीन बार लिख (या लिखवा) कर, प्लास्टिक कोर्टिंग कर के चमड़े या रेगज़ीन या कपड़े में सी कर गले में डाल या बाजू पर बांध दीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** हर किस्म के बुख़ार से नजात मिलेगी। ﴿17﴾ **हेपाटाइटिस का रूहानी इलाज** : हर बार **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ “सूरए कुरैश” 21 बार (अव्वल आख़िर 11 बार दुरूद शरीफ़) पढ़ (या पढ़वा) कर आबे ज़मज़म शरीफ़ या उस पानी में जिस के अन्दर आबे ज़मज़म शरीफ़ के चन्द क़तरे शामिल हों, दम कीजिये और रोज़ाना सुब्ह, दोपहर और शाम पी लीजिये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** 40 रोज़ के अन्दर अन्दर शिफ़ायाब हो जाएंगे। (सिर्फ़ एक बार दम किया हुवा पानी काफ़ी है हस्बे ज़रूरत मज़ीद पानी मिला लीजिये) ﴿18﴾ **पित्ते और मसाने की पथरी का रूहानी इलाज** : **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 46 बार सादा कागज़ पर लिख कर पानी में धो कर पीने से पित्ते और मसाने की पथरी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** रेज़ा रेज़ा हो कर निकल जाएगी। (मुद्दते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा) ﴿19﴾ **दिल और सीने की बीमारियों का रूहानी इलाज** : **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 75 बार पढ़ कर दिल में सूराख़ वाले बच्चे नीज़ घबराहट, दिल और सीने के तमाम मरीज़ों के सीने पर दम करना बि फ़ज़्लही तआला मुफ़ीद है। ﴿20﴾ **हर तरह के मरीज़ का रूहानी**

इलाज : يَامُعِيْدُ दाइमी मरीज़ हर वक़्त पढ़ता रहे, अल्लाह पाक सिद्दहत इनायत फ़रमाएगा ।

अपने दांत गौर से आईने में देख लीजिये

ख़ैर ख़्वाही के ज़ब्बे के तहत सवाब कमाने की हिर्स में अर्ज़ है कि अगर आप के दांत मैले कुचैले या पीले हैं तो खुशदिली के साथ सगे मदीना عَنْ عَمْرِو की तरफ़ से चन्द मदनी फूल क़बूल फ़रमा लीजिये, إِنْ شَاءَ اللهُ बहुत फ़ाएदा होगा ।

❁ मैले कुचैले दांत दूसरों के लिये कराहत और घिन का बाइस होते हैं
 ❁ मुलाक़ाती वग़ैरा पर मैले दांत वाले की शख़िस्सियत का असर अच्छा नहीं पड़ता ❁ ब कसरत पान गुटके वग़ैरा खाने वाले गोया पैसे दे कर अपने दांतों का हुस्न तबाह करते, मुंह का छाला और केन्सर ख़रीदते हैं
 ❁ मिस्वाक सुन्नत के मुताबिक़ अच्छी तरह रगड़ रगड़ कर कीजिये ❁ खाने के बा'द दांतों में ख़िलाल करने का मा'मूल बना लीजिये ❁ जब भी कुछ खाएं या चाय वग़ैरा पियें, कुल्ली भर कर चन्द मिनट तक मुंह में पानी हिलाते रहें इस तरह मुंह का अन्दरूनी हिस्सा और दांत किसी हद तक धुल जाएंगे । ❁ सोते वक़्त हल्क़ और दांत अच्छी तरह साफ़ होने चाहिए, वरना गले में तकलीफ़ और दांतों पर मैल की तह मज़बूती से जमेगी, बन्द मुंह के अन्दर गिज़ाई अज्ज़ा सड़ने से मुंह में बदबू होगी और जरासीम पेट में जाने से तरह तरह की बीमारियां जनम ले सकती हैं ❁ सोने में पेट की गन्दी हवाएं ऊपर को उठती हैं लिहाज़ा मुंह बदबूदार हो

जाता है, उठ कर फ़ौरन हाथ धो कर मिस्वाक कर के कुल्लियां कर लीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** मुंह की बदबू जाती रहेगी ।

बेहतरीन मन्जन

मुनासिब मिक्दार में खाने का सोडा और उतना ही नमक मिला कर बोतल में डाल लीजिये, बेहतरीन मन्जन तय्यार है । अगर मुवाफ़िक़ हो तो रोज़ाना इस से दांत मांझिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** हाथों हाथ दांतों का मैल उतरता देखेंगे । बिलफ़र्ज मसूढ़े या मुंह में किसी जगह जलन वगैरा महसूस फ़रमाएं तो मिक्दार कम कर के देख लीजिये, अब भी तकलीफ़ हो तो सफ़ाई की कोई और तदबीर कीजिये, दांत बहर हाल साफ़ होने चाहिएं ।

मदनी फूल : हर तरह की सफ़ाई सुन्नत और मतलूबे शरीअत है ।

बदबू न दहन में हो, दांतों की सफ़ाई हो महकाई दुरूदों की मुंह में तेरे भाई हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

अगले हफ्ते का रिसाला

